

## गुंजा की नई नई प्रजातियाँ छत्तीसगढ़ के वनों में

\* 35 से अधिक रोगों के उपचार में पारंपरिक उपयोग

\* रत्नों की उपस्थिति पता करने में गुंजा का उपयोग

छत्तीसगढ़ में वनौषधियों से संबंधित पारंपरिक ज्ञान के दस्तावेजीकरण में जुटे हुये वनौषधि विशेषज्ञ पंकज अवधिया ने खुलासा किया है कि राज्य के वनों में गुंजा की नई नई प्रजातियाँ उपलब्ध हैं जिनका वर्णन संदर्भ साहित्यों में नहीं मिलता है। इन सभी प्रजातियों को एब्रस प्रीकेटोरियस के नाम से पहचाना जाता है पर वनों में एब्रस पल्चेल्लस जैसी उपयोगी प्रजातियाँ भी पायी जाती हैं।

छत्तीसगढ़ के विभिन्न भागों में किये जा रहे एथनोबॉटेनिकल सर्वेक्षणों और अध्ययनों के हवाले से पंकज अवधिया ने बताया कि आमतौर पर गुंजा जिसे रत्ती भी कहा जाता है, के बीज सफेद या लाल रंग के होते हैं। इनमें सफेद रंग के बीजों वाले पौधों को अधिक उपयोगी माना जाता है। छत्तीसगढ़ के वनों में विभिन्न रंग के बीजों के आधार पर नई प्रजातियों के पौधे उपलब्ध हैं। भिन्न-भिन्न रंग के बीजों का प्रयोग राज्य के पारंपरिक चिकित्सक अलग-अलग रोगों की चिकित्सा में करते हैं। पौध भागों में भिन्नता के आधार पर 4 प्रजातियाँ वनों में उपलब्ध हैं। राष्ट्रीय बाजारों में गुंजा की आपूर्ति एब्रस प्रीकेटोरियस के नाम से की जाती है, जबकि आपूर्ति मिली - जुली प्रजातियों की होती है। सर्वेक्षणों और अध्ययनों से यह भी ज्ञात हुआ कि राज्य में गुंजा के अविवेकपूर्ण दोहन से बहुत से भागों से यह वनौषधि समाप्त होती जा रही है। गुंजा की संख्या कम होने के कारण इसका दुष्प्रभाव बड़े वृक्षों पर भी पड़ रहा है। गुंजा के पौध भागों से बहकर बड़े वृक्षों तक पहुंचने वाला जल वृक्षों की वृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पंकज अवधिया का सुझाव है कि राज्य के संवेदनशील क्षेत्रों में गुंजा के एकत्रण पर कुछ वर्षों तक प्रतिबंध लगाकर इसकी घटती संख्या पर अंकुश लगाया जा सकता है। राज्य में गुंजा के औषधि उपयोगों के विषय में पारंपरिक ज्ञान समृद्ध है। पारंपरिक चिकित्सक 35 से अधिक रोगों की चिकित्सा में गुंजा के पौध भागों का प्रयोग करते हैं। 80 से भी वनौषधीय मिश्रणों में गुंजा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। दक्षिण छत्तीसगढ़ के पारंपरिक चिकित्सक गुंजा की जड़ की सहायता से उन लोगों को पुनर्जीवित (अल्प समय के लिये) करने का दावा करते हैं जिन्हें कि आधुनिक चिकित्सा पद्धति मृत घोषित कर देती है। तंत्र क्रिया से जुड़े लोगों के बीच भी गुंजा का प्रयोग लोकप्रिय है। गुंजा की पत्तियों में पायी जाने वाली शक्कर से 50-80 गुना अधिक मिठास ने इसे स्टीविया जैसे दुष्प्रभाव पूर्ण पौधे के सशक्त भारतीय विकल्प के रूप में स्थापित कर दिया है। राज्य के उन क्षेत्र, जहाँ गुंजा प्राकृतिक रूप से उगता है, के किसान फसलों की सुरक्षा के लिये इसका विभिन्न पौध भागों का प्रयोग करते हैं। छत्तीसगढ़ के मैदानी भागों के पारंपरिक चिकित्सक गुंजा के विभिन्न रंगों वाली प्रजातियों की प्राकृतिक उपस्थिति की सहायता से उन भूमि में पाये जाने वाले रत्नों की भविष्यवाणी करते हैं। यह पारंपरिक ज्ञान उनके बीच लोकप्रिय है। राज्य के हीरा बहुल क्षेत्रों में गुंजा की प्राकृतिक संख्या विशेष रूप से अधिक है। यद्यपि इस पारंपरिक ज्ञान को वैज्ञानिक प्रमाणिकता नहीं मिली है पर पंकज अवधिया का मानना है इस ज्ञान की लोकप्रियता इसकी उपयोगिता की परिचायक है। इन पर पर्याप्त शोधों की आवश्यकता है। साथ ही गुंजा की नई प्रजातियों की वैज्ञानिक पहचान कर इनके संरक्षण और संवर्धन की आवश्यकता है ताकि भविष्य में गुंजा की नई प्रजातियों के विकास में इन प्रजातियों का उपयोग किया जा सके।